>

Title: Need to provide adequate financial assistance to the dependants of those killed in road accidents in the country.

श्री शैलेन्द्र कुमार (कौशाम्बी): माननीय सभापति महोदय, आपने मुझे अति महत्वपूर्ण विषय पर बोलने का अवसर दिया, इसके लिए मैं आपका बहुत आभारी हूं। मैं आपके माध्यम से सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि देश में नेशनल हाईवेज बने और एक फ्रिक्वेंसी भी तय हुई कि इतनी स्पीड से हमें इतने किलोमीटर इतने समय में पहुंचना है। लेकि आज जो स्पीड की फ्रिक्वेंसी रेट है, वह बहुत कम हुई है। यहां तक कि हाईवे पर जो सुरक्षा के लिए फैंसिंग की गई थी, वह सब बिल्कुल ध्वस्त हो चुकी है और वहां जो पुल, पुलिया और सड़कें बनी हैं, उनकी गुणवत्ता भी बहुत ही दयनीय है। वे जगह-जगह से उखड़ गई हैं और मरम्मत योग्य हैं। इधर आये दिन देखा गया है कि नेशनल हाईवे पर बड़ी-बड़ी दुर्घटनाएं हुई हैं और नेशनल हाईवे के मानक में यह है कि वहां पर मोबाइल ट्रामा सैंटर खोला जायेगा। लेकिन आज तक वहां न तो एम्बुलेंस की व्यवस्था है और न किसी ट्रामा सैंटर की व्यवस्था है।

मैं आपके माध्यम से सरकार से मांग करता हूं कि वहां एम्बुलेंस और ट्रामा सैंटर मोबाइल बनाये जाएं और उनमें ब्लड बैंक की भी व्यवस्था हो। क्योंकि दुर्घटना होने पर यात्रियों को ज्यादातर सबसे पहले फर्स्ट एड दी जाती है, उसके बाद उन्हें खून की आवश्यकता होती है। दुर्घनटना के बाद वे जिला अस्पताल या सैंटर पर जाते हैं तो जाते-जाते रास्ते में उनकी मृत्यु हो जाती है।

दूसरी बात मैं कहना चाहूंगा कि अभी सैटरडे, सन्डे में मैं 4/5 की रात्रि में गया था, दीवर कोतारी एक जगह है, वहां पर कौशाम्बी का मुख्यालय मंझनपुर है। एक खानदान के लोग थे, जो उर्स-मिलाद से रात के समय लौट रहे थे, उसमें 14 लोग टवेरा गाड़ी में सवार थे। अचानक एक्सीडेंट हुआ और सात लोग मौके पर मर गये। वे सब एक ही परिवार के लोग थे। मैंने अपनी जिंदगी में होश में पहली बार ऐसा मंजर देखा कि सात लाशें एक साथ कब्रिस्तान में दफनाई गई। मैं मांग करना चाहूंगा कि जो इस प्रकार की दुर्घटनाएं हो रही हैं, उन पर अंकुश लगाने के लिए अगर नेशनल हाईवे स्टेट रोड है या जिले की डिस्ट्रिक्ट रोड है तो वहां इस प्रकार की व्यवस्थाएं होनी चाहिए और केन्द्र सरकार को उसके लिए धन मुहैया कराना चाहिए। आये दिन बड़े-बड़े हादसे हो रहे हैं, यहां तक कि बीस-बीस और पच्चीस-पच्चीस लोग शादी-ब्याह में जाते हैं और एक्सीडेंट में कभी-कभी पूरा परिवार ही नष्ट हो रहा है। ऐसे हालात में यहां से कुछ व्यवस्था हो। बहुत से ऐसे गरीब परिवार हैं, जिनकी मृत्यु होती है। ये जो सात नौजवान एक परिवार के मरे हैं, इनकी उम्र 21 साल से 25 साल के बीच थी, ये सब नौजवान थे, उनमें से दो साल पहले एक की शादी हुई थी।

मैं आपके माध्यम से सरकार से मांग करना चाहता हूं कि हाईवे पर सुरक्षा और इनक्रोचमैन्ट रोकने की व्यवस्था हो और केन्द्र सरकार राज्य सरकार को इतनी आर्थिक मदद करे, ताकि वहां जो गरीब परिवार हैं, उन गरीब परिवारों की मदद हो सके और जो घायल हो जाते हैं, उनका इलाज फ्री में होना चाहिए। यही मैं सरकार से मांग करता हूं।